इकाई 10 पुराणों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व

इकाई की रुपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 पुराणों का सामाजिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व

10.4 सारांश

10.5 शब्दावली

10.6 अभ्यासार्थ प्रश्न/उतर

10.7 बहुविकल्पीय प्रश्न

10.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

10.9 उपयोगी पुस्तकें

10.10 निबन्धात्मक प्रश्न

10.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त –

- पुराणों के सामाजिक महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे;
- पुराणों के सांस्कृतिक महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे;
- पुराणों के दार्शनिक महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे;
- पुराणों के साहित्यिक महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे;
- पुराणों के नैतिक महत्त्व के विषय में आप परिचित होंगे।

10.2 प्रस्तावना

पुराण साहित्य से सम्बन्धित खण्ड तीन की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई के अध्ययन से आप बता सकते है कि पुराण की आवश्यकता किस प्रकार से हुई? 'पुराण' समाज का अङ्ग बनाकर प्राचीन कथाओं, वंशावलियों, इतिहास भूगोल के तथ्यों एवं सामान्यतः ज्ञान समाज के सभी विषयों को पुराणों में काल–क्रम से समाविष्ट कर दिया गया। जिस प्रकार महाभारत की प्रसिद्धि प्राचीन काल से चली आ रही है उसी प्रकार 'पुराण' भी प्रसिद्ध रहा है, जिसकी अन्तिम रचना व्यास जी ने ही की थी। पुराणों का सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, शैक्षणिक, नैतिक आदि दृष्टियों से इतना महत्त्व है जितना किसी साहित्य का नहीं हो सकता। पुराणों में सामाजिक सांस्कृतिक आदि सबका वर्णन इस इकाई में किया गया है।

10.3 पुराणों का सामाजिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व

पुराणों का सामाजिक महत्त्व–पुराणों में भारतीय समाज की व्यवस्था का न केवल चित्रण है, अपितु आदर्श समाज बनाने की व्यापक विधियां वर्णित हैं। वर्णाश्रम के गुण कर्म, विविध संस्कार, पारिवारिक सम्बन्ध, राजधर्म, स्त्रीधर्म, गुरु शिष्य के बीच सम्बन्ध इत्यादि के विवरण हैं। पुराण पूरे समाज के लिए आचार संहिता प्रदान करते हैं। किसी देवता या देवी की उपासना का विधान बताकर उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति पर पुराणों में बल दिया गया है। जिस देवता की भक्ति का विधान है उसे ही श्रेष्ठ कहकर अन्य देवताओं को गौण भी बताया गया है। ब्रह्म, विष्णु और शिव की उपासना का विशेष महत्त्व विविध पुराणों में अङ्कित है। मुख्य पुराणों में विष्णु के विविध अवतारों का वर्णन या शिव और उनके परिवार की विभिन्न कथाएँ वर्णित हैं। अवतारवाद, मूर्तिपूजा और भक्ति का अत्यधिक प्रचार इनमें मिलता है। व्रतों और उपवासों के अनुष्ठान के फल दिखाकर पुराणों में जनसामान्य को सामाजिक बनाने का प्रयास किया गया है। पुराणों के ज्ञान के माध्यम से समाज का उत्थान हुआ। इसलिए सामाजिक जीवन के लिये पुराणों का ज्ञान आवश्यक है

पुराणों का सांस्कृतिक महत्त्व

पुराणों ने प्रायः दो सहस्र वर्षों से भारतीय जन–जीवन को बहुत प्रभावित किया गया है, औपचारिक शिक्षा से वञ्चित जनता में पारम्परिक ज्ञान का वितरण किया है, उसे नैतिक दृष्टि से आदर्शोन्मुख बनाकर भारतीय राष्ट्र के लिए समर्पण भावना में निरत बनाया है तथा आस्तिकवाद की व्यवस्था में रखकर सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बाँध रखा है। पुराणों का धार्मिक, ऐतिहासिक, शैक्षणिक, नैतिक आदि दृष्टियों से इतना महत्त्व है, जितना किसी साहित्य का नहीं हो सकता। यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार किया जाता है।

पुराणों की सर्वोपरि महत्ता आस्तिकवाद के समर्थन के कारण है। उनमें अनेक देवताओं का वर्णन है। सभी देवताओं की समानता की घोषणा करने पर भी एक देवता की महत्ता दिखाना सभी पुराणों का लक्ष्य रहा है। विशेष रूप से ब्रह्म, विष्णु, शिव, गणेश तथा सूर्य की उपासना पद्धतियों का प्रमाणिक बोध पुराणों से होता है। इन्हीं के आधार पर परवर्ती कर्मकाण्ड ग्रन्थों का विकास हुआ है। विन्टरनित्स का कथन है कि धर्म के इतिहास की दृष्टि से वे अमूल्य है और केवल इसी दृष्टि से उनका अध्ययन होना चाहिए, जो आज तक नहीं हो सका है। ये पुराण हिन्दू संस्कृति के लिये सभी अङ्गों और स्तरों का – पुराण–कथाओं, मूर्तिपूजा, सर्वेश्वररवाद और एकेश्वरवाद, ईश्वर भक्ति, दर्शन और पूर्वाग्रह, उत्सव और त्योहार, तथा आचार का किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा हमें कहीं अधिक गहन ज्ञान प्रदान करते हैं। हिन्दू संस्कृति की सर्वाधिक स्पष्ट रूपरेखा पुराणों में अङ्कित है। सनातन धर्म पुराणों को वेदों से बढ़कर महत्त्व देता है। नारदपुराण में (उत्तर. 24/17) इन्हें वेदों से अधिक प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि वेद अपने प्रचार और व्याख्या के लिए पुराणों पर आश्रित हैं–

वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने।
वेदाः प्रतिष्ठिताः सर्वे पुराणे नात्र संशयः।।

पुराणों का दार्शनिक महत्त्व– कुछ पुराणों में अद्‌भुत दार्शनिक सामग्री मिलती है। सृष्टि के क्रम का रोचक वर्णन करते हुए प्रायः सभी पुराण जगत् की उत्पत्ति का दार्शनिक विवेचन करते हैं। सामान्य रूप से सांख्य दर्शन के सृष्टिक्रम को मूल सृष्टि की व्याख्या करने के लिए स्वीकार किया गया है किन्तु यत्र तत्र वेदान्त के मायावाद, सर्वेश्वरवाद इत्यादि की भी युगपत् चर्चा है। विष्णुपुराण में विष्णु को ही प्रधान (अव्यक्त), व्यक्त और काल भी कहा गया है। शैव पुराणों में परमात्मा को 'शिव' कहकर ये सारी बाते उन्हीं पर आरोपित हैं। पृथ्वी जब जीवों के निवास के योग्य हो गयी तब ब्रह्म के मानस पुत्रों का आगमन हुआ। इस प्रकार सृष्टि की दार्शनिक व्याख्या की गयी है। भागवत पुराण दर्शन के विविध पक्षों का समन्वय करके भक्ति–दर्शन का सर्वाङ्गपूर्वक विवेचन करता है जिससे 'विद्यावतां भागवते परीक्षा' की उक्ति प्रचलित है। पुराणं पञ्चलक्षणम् के अनुसार सृष्टि, प्रलय तथा पुनःसृष्टि के दार्शनिक पक्ष को पुरातात्त्विक रूप देखकर अनेक आख्यान पुराणों में प्रस्तुत किये गये हैं। जगत की जन्म, स्थिति और प्रलय को क्रमशः ब्रह्म, विष्णु और शिव से सम्बद्ध करके दार्शनिक विषयों को धर्म से जोड़ा गया है। पुराणों के दार्शनिक स्थलों के विवेचन के लिए पर्याप्त शोधकार्य का अवकाश है।

पुराणों का साहित्यिक महत्त्व– पुराणों में यद्यपि सरल, परिमार्जित तथा स्वाभाविक संस्कृत भाषा का प्रयोग है जो अनेक युगों की जन प्रचलित वाग्धाराओं का प्रतिनिधित्व करती है किन्तु कुछ पुराणों में काव्यमयी अभिव्यक्ति मिलती है। गद्य पद्य दोनों का मिश्रित रूप साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। भागवत पुराण के साहित्यिक सौन्दर्य के अनुशीलन का प्रयास इधर के कुछ ग्रन्थों में हुआ है जिससे पुराणों के साहित्यिक मूल्य पर प्रकाश पड़ता है। कुल मिलाकर पुराण साहित्य भारतवर्ष की ऐसी सम्पत्ति है जिसका मूल्याङ्कन करना आज अत्यन्त आवश्यक है।

पुराणों का शैक्षणिक महत्त्व– भारतवर्ष की जनता प्राचीन काल में अधिकांशतः औपचारिक शिक्षा से वञ्चित रहती थी। वेदों की शिक्षा तो अत्यधिक सीमित थी। फिर भी, हमारे देश की जनता को सर्वथा मूर्ख, अविवेकी या असंस्कारी नहीं कहा जा सकता क्योंकि पुराणों के उपदेश उसे सुलभ थे। पुराणों की कथा का आयोजन मुख्य मुख्य क्षेत्रों में होता था, जिन्हें सारी जनता भेद भाव छोङकर सुनती थी। इन कथाओं में अनौपचारिक शिक्षण की व्यवस्था थी। यही कारण है कि कतिपय पुराणों में नीति, दर्शन, धर्मशास्त्र, काव्यशास्त्र, वास्तुविद्या, आयुर्वेद, व्याकरण, ज्योतिष, शरीर विज्ञान आदि शास्त्रीय और वैज्ञानिक विषयों का प्रतिपादन किया गया। परिणामतः अक्षर ज्ञान से रहित जनता भी पुराणों के माध्यम से, केवल श्रवण द्वारा, शिक्षा–संस्कार पाती थी। कथा कहानियों के द्वारा उसे अपने जीवन को आदर्शमय बनाने का सुन्दर अवसर मिलता था। आज के सभी शिक्षा साधनों से भी वह परिणाम नहीं निकल रहा है जो पुराणों की साधारण कथा उत्पन्न करती थी।

पुराणों का नैतिक महत्त्व– पुराणों ने मनुष्य की क्रियाओं को धार्मिक रूप प्रदान करके उन्हें पाप और पुण्य के रूप में विभाजित किया था। यद्यपि वैदिक युग से ही यह कार्यक्रम आरम्भ हो गया था तथा धर्मसूत्रों में इसकी व्यापक व्यवस्था मिलती है किन्तु इस व्यवस्था में विश्वास उत्पन्न करने का कार्य पुराणों ने ही किया था। इसके लिए अनेक रोचक आख्यान बने जिनमें पापकर्म के लिए दण्ड और पुण्यकर्म के लिए पुरस्कार के विवरण दिये गये। इसी प्रसंग में स्वर्ग और नरक का विस्तृत वर्णन कई

पुराणों में किया गया। इसका परिणाम हुआ कि भारतीय जनता, आज की जड़वादी संस्कृति के आगमन के पूर्व तक, पुराण–श्रवण के कारण आदर्श जीवन यापन करती थी, जिसकी प्रशंसा चीनी तथा पश्चिमी यात्रियों ने मुक्तकण्ठ से की है। नरक की यातना के भय से अनैतिक तथा पापकर्मों से दूर रहना एवं स्वर्गादि फलों से आकृष्ट होकर व्रत उपवास, दया दान आदि कर्मों में रुचि होना सामान्य भारतीय का जीवन दर्शन था। इसी दृष्टिकोण का साक्षात्कार हमें इस प्रसिद्ध श्लोक में होता है–

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

पुराणों का भौगोलिक महत्त्व– अनेक पुराणों में 'भुवनकोश' प्रकरण देकर समस्त भूमण्डल का यथासाध्य ज्ञान देने का प्रकाश किया गया है। विदेशों के वर्णन में भले ही कल्पना या गतानुगतिक सूचनाओं का आश्रय लिया गया हो किन्तु भारत के भूगोल का निरूपण करने में पौराणिक सूचनाएँ प्रायः प्रामाणिक हैं। इनमें न केवल भारत के विभिन्न भूभागों का अपितु उसकी नदियों, पर्वतों, झीलों, वनों, मरुस्थलों, नगरों, प्रदेशों एवं जातियों का भी अपेक्षाकृत अधिक यथार्थ विवरण प्रस्तुत है। वायु, मत्स्य और मार्कण्डेय पुराणों में भौगोलिक विवरण बड़े हैं जबकि पुराण में यह संक्षिप्त है। पुराणों की सूचनाओं के आधार पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों के भूगोल का अध्ययन आज लोकप्रिय शोधकार्य है जो इनके भौगोलिक महत्त्व का परिचायक है।

पुराणों के ऐसे विषय में सर्वप्रथम भूगोल का नाम आता है। भूगोल का सभी पुराणों में सांगोपांग विस्तृत विवरण है। पहले सम्पूर्ण पृथ्वी का परिमाण, फिर प्रत्येक द्वीप की सीमा का उल्लेख उनमें पर्वतों, नदियों, जनपदों और भौगोलिक विषयों का यथार्थ उल्लेख यह बताता है कि पुराणों में भूगोल का व्यापक विवरण है। इसी प्रकार प्रकाश के ग्रह नक्षत्र आदि का प्रावधान, उनका भूमि पर पड़ने वाला प्रभाव, ऐसे विषय सभी पुराणों में पाये जाते हैं। जिनसे यह कहने में संकोच नहीं होता कि भूगोल और खगोल सम्बन्धी विवरण सभी पुराणों का अपना ही सम्बन्ध हैं, कम महत्व का नहीं माना जा सकता। इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों का कहना हैं कि पुराणों में समुपलब्ध भूगोल–खगोल आदि विषयों की सामग्री कोई बहुत अधिक प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती। कल्पना मिश्रित कथाप्रवाह में कथावाचक का ध्यान जिस ओर मुड़ गया उसी विषय को लच्छेदार भाग में उसने यह कह दिया और आगे चलकर वहीं लिपिबद्ध कर दिया गया। यह विवरण यथार्थ ज्ञान के आधार पर हैं। इसमें पूर्व सन्देह हैं। इस प्रकार के सन्देह करने वाले व्यक्ति प्रत्येक विषय के अध्ययन में एक विशेष दृष्टि से काम लेते हैं। जिसे आज विकासवाद शब्द अभिहित किया जाता हैं। इस पक्ष में यान्त्रिक प्रक्रिया पर विश्वास किया जाता है और यह समझा जाता है कि यन्त्रों की सहायता के बिना व्यापक तथ्यों का ज्ञान सम्भव ही नहीं है। निष्कर्ष यही है कि तत्वज्ञान के सम्बन्ध में प्राचीन भारत में व्यापक रूप से प्रचलित मानसिक और यौगिक प्रक्रिया के समक्ष आज के यान्त्रिक साधन अत्यन्त ही क्षुद्र स्तर के माने जायेगें । यौगिक साधन सम्पति इन साधनों से कहीं अधिक सम्पन्न और तथ्यों के निकट पहुँचाने वाली थी। उसी प्रकिया से प्राचीन भारतीय मनीषियों को भूगोल, खगोल आदि का भी विस्तृत ज्ञान प्राप्त था।

पुराणों के राष्ट्रीय एकता का निरूपण– पुराणों में सम्पूर्ण भारत की एकता का सफल प्रयास किया गया है। विष्णुपुराण, भागवतपुराण आदि में भारतवर्ष की महिमा का गान किया गया है जहाँ जन्म लेने के लिए देवता भी उत्सुक रहते हैं–

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्यि भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

अहो अमिषां किमकारी शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः।।

इस प्रकार भारत में जन्म लेने का महत्त्व दिखाकर पुराणों ने राष्ट्रीय गौरव तथा अस्मिता का निरूपण किया है। सभी प्रदेशों में रहने वाले भारतीयों को एक सांस्कृतिक सूत्र में पुराणों ने युगों से बाँध रखा है। राजनीति की दृष्टि से एक शासन में निबद्ध न रहने वाला भारत सांस्कृतिक और धार्मिक एकबद्धता में अवस्थित है, यह पुराणों का बहुत बड़ा योगदान है।

तीर्थयात्रा पर पुराणों ने बहुत बल दिया है। ये तीर्थ भारतवर्ष के विभिन्न भागो में अवस्थित हैं। कुछ तीर्थ तो भारत की वर्तमान सीमा के बाहर हैं जैसे– कैलास पर्वत, मानसरोवर इत्यादि। सुदूर दक्षिण के निवासी हिमालय एवं कश्मीर जैसे उत्तरवर्ती क्षेत्रों के तीर्थों की यात्रा अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं तो उत्तर के निवासी कुमारी क्षेत्र (कन्याकुमारी), रामेश्वरम् आदि दक्षिणात्य तीर्थों की यात्रा करना चाहते हैं। भारत की पवित्र नदियों, सरोवरों और पर्वतों की स्थिति पूरे देश में व्याप्त है जहाँ स्नान दर्शन यात्रा की महिमा पुराणों में वर्णित हैं। इनके प्रति श्रद्धाभाव उत्पन्न करके पुराणों ने सम्पूर्ण भारत के लिए उदार दृष्टिकोण निर्मित करने में पूरी शक्ति लगा दी है। ये पुराण क्षेत्रीयता को राष्ट्रीयता में और संकीर्णता को उदारता में परिणत करते हैं।

भारतीय पुराणों में हिमालय का वर्णन

यह भारतवर्ष के उत्तर में और पूर्व से पश्चिम में पूर्वसमुद्र से कौंच प्रदेश तक और सिन्धु प्रदेश तक फैला हुआ है। हिमालय का वर्णन भारतीय पुराणों में बड़े ही विस्तार एवं मनमोहक ढंग से किया गया है। यह भारत की बड़ी–बड़ी नदियों का उद्‌गम स्थान है और संसार का सर्वोच्च तथा मनोरम पर्वत है। इस पर्वत के प्रदेश सृष्टि के आदि काल के तथा अन्य प्राचीन घटनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। भगवती के चरित्र में 'हिमवन्तं नगेश्वरम्' का अनेक बार उल्लेख आता है। संस्कृत के अनेक काव्य और महाकाव्य हिमालय के रोचक और मोहक वर्णनों से भरे पड़े हैं। इसकी प्रसिद्धि प्राप्त सैकड़ों चोटियाँ हैं, जिनका वर्णन पृथक्–पृथक् पर्वत के रूप में भी उपलब्ध होता है। कैलास हिमालय की ही एक चोटी है, परन्तु उसे एक अलग पर्वत के रूप में भी अभिहित किया गया है। इन्द्रकील पर्वत पर अर्जुन ने तपस्या की थी, वह भी प्रलकनन्दा नदी के तट पर बदरीनाथ के मार्ग में आने वाले श्रीनगर नामक स्थान के समीप आज भी देखा जा सकता है। मार्कण्डेय पुराण में जिस स्थान पर महिषासुर के वध का उल्लेख हुआ है वह केदारनाथ के मार्ग में 'मैखण्डा' नाम से आज भी मिलता है। इस प्रपभंश नाम में महिष खण्डन या महिष वध की स्पष्ट ध्वनि है। केदारनाथ यात्रा के मार्ग से कुछ अलग हटकर एक काली नदी प्रवाहित है जिसके तट पर महाकाली और महा सरस्वती के मन्दिर विद्यमान है उसके दूसरे पार जो पर्वत है

उसकी चोटी का नाम 'कालीशीला' है उस शिला पर शाक्त सम्प्रदाय में प्रचलित सभी यंत्र उत्कीर्ण है। यह बात प्रसिद्ध है कि इस स्थान पर भगवती ने निशुम्भ का वध किया था। इस प्रकार, हिमालय पर्वत भारतीय साहित्य का आधार है। इससे उत्तर की तरफ 'हेमकूट' नाम का पर्वत है और उसके उत्तर में अनेक पर्वतों से आवृत 'निषध' नाम का पर्वत है। उपर्युक्त हेमकूट 'श्यामसमुद्र' से फारस तक और 'चीनसमुद्र' से लालसागर तक विस्तृत है।

भारतीय पुराणों में महेन्द्र का वर्णन

'महेन्द्र' पर्वत की पहचान वर्त्तमान उड़ीसा से प्रारम्भ होनेवाली पर्वतमाला से की जा सकती है। दक्षिण के पर्वतों को 'मलय' पर्वत के नाम से प्राचीन साहित्य में व्यवहृत किया गया था। यही कारण है कि उन पर्वतों का पृथक्–पृथक् नाम लेते समय व्यवहार में उनके आगे महेन्द्र मल्लयै, नल्लमल, अन्नमलै, एलामलै आदि नामों से किया जाता है। इस प्रकार, 'महेन्द्र पर्वत' दक्षिण में स्थित सिद्ध होता है।

भारतीय पुराणों में मलय का वर्णन

कुलपर्वतों में मलय नामक पर्वत का भी उल्लेख है। यह अभी कहा गया है कि भारत के दक्षिण के पर्वतों को मलय कहा जाता था, परन्तु मलय नाम का एक पृथक् पर्वत भी था, जिसके लिए यह बात प्रसिद्ध है कि वहाँ चन्दन बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध होता था। वहाँ का पवन, चन्दन के गंध से सुगन्धित रहता था, जिसे मलयानिल कहा जाता है। आज भी दक्षिण के मैसूर आदि प्रदेशों में चन्दन अधिक मात्रा में पाया जाता है।

भारतीय पुराणों में शक्तिमान् का वर्णन

'शक्तिमान्' पर्वत को वर्त्तमान विद्वान् खानदेश और 'अजन्ता' के समीपस्थ मानते हैं। शक्तिमान में से निकली हुई नदियों में से 'ऋषिका' एक नदी है। इसकी वर्त्तमान पहचान कुछ कठिन हो गई है। महाभारत में भीम द्वारा किए गए पूर्व दिग्विजय के प्रसंग में इसका उल्लेख मिलता है। राजशेखर ने भी इस पर्वत की अवस्थिति पूर्व में ही मानी थी।

भारतीय पुराणों में ऋक्ष का वर्णन

पुराणों में इसका नाम कहीं कहीं ऋक्षवान् भी उल्लिखित है। भालू को ऋक्ष (रीछ) कहते हैं। इस पर्वत पर भालू बहुत अधिक थे, इसलिए इस पर्वत का नाम सम्भवतः ऋक्षपर्वत हो गया। वाल्मिकी रामायण में भी रीछों का पर्याप्त वर्णन है। रीछराज जाम्बवन्त ने भगवान् रामचन्द्र की सहायता की थी। हो सकता है, उसका निवास स्थान ऋक्षपर्वत ही रहा हो। इस कारण उसका नाम ऋक्षपर्वत हो गया हो। वर्त्तमान में यह पर्वत, बघेलखण्ड से आरम्भ करके सुरगुजा, पालामऊ, राँची, सिंहभूमि के पश्चिमी हिस्से, यशपुर आदि प्रदेशों तक में फैला है। पुराणों के वर्णन से ऐसा ज्ञात होता है कि इसकी पश्चिमी सीमा 'मेकल' नामक चोटी है जहाँ नर्मदा, सोना और महानदी का उद्मग–स्थान है। इस सम्पूर्ण पर्वतीय भाग में आज भी भालूओं का बाहुल्य है।

भारतीय पुराणों में विन्ध्य का वर्णन

विन्ध्य पर्वत हिमालय की भाँति ही प्राचीन साहित्य में प्रसिद्ध है। वर्त्तमान मिर्जापुर जिले के समीप से यह पर्वतमाला चलती है। बाणभट्ट की 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' में इसका बड़ा ही सजीव वर्णन है। पुराणों में यह वर्णन आता है कि पहले पर्वत भी पक्षियों की भाँति उड़ते थे। विन्ध्य के विषय में भी यह कथा है कि अपनी ऊँचाई की धाक जमाने के लिए यह आकाश में ऊपर की और उठने लगा और इतना ऊँचा उठा कि सूर्य का मार्ग ही अवरुद्ध हो गया। उसी समय उसी मार्ग से अगस्त्य ऋषि (विन्ध्याचल के गुरु) उसके निकट आये। अपने गुरु को आता हुआ देखकर विन्ध्य ने भक्ति भाव से उन्हें पृथ्वी पर लेटकर साष्टांग प्रणाम किया। अगस्त्य ऋषि ने उसे यह निर्देश दिया कि मैं दक्षिण की ओर जा रहा हूँ, जबतक उधर से वापस नहीं लौटूँ, तब तक तुम उसी भाँति भूमिष्ठ रहो। आज तक अगस्त्य ऋषि वापस नहीं लौटे और उनकी प्रतीक्षा में विन्ध्याचल आज तक भूमिष्ठ पड़ा हुआ है। इस कथानक का आशय विन्ध्याचल पर्वत की श्रेष्ठता सिद्ध करना ही है। अगस्त्य का वर्णन आगे किया जायेगा, जिससे इस कथानक पर विशेष रूप से प्रकाश पड़ेगा।

भारतीय पुराणों में पारियात्र का वर्णन

यह पवित्र ब्रह्मवर्त्त के दक्षिण आधुनिक भारत के पश्चिमी भाग में अवस्थित है और इसका उल्लेख भी भारतीय साहित्य में प्र्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार, विन्ध्याचल का कुछ भाग तथा वर्त्तमान 'अरावली पर्वत' का ही प्राचीन नाम पारियात्रा था, जिसका उत्तरी भाग पंजाब में और दक्षिणी भाग बुन्देलखण्ड होता हुआ नर्मदा के तट तक विस्तृत था। राजस्थान की पहाड़ियाँ भी इसी पारियात्र की श्रृंखला में आती हैं। इन कुल पर्वतों के अतिरिक्त भागवत तथा अन्य पुराणों में कुछ अन्य पर्वतों का उल्लेख हैं। मंगल प्रस्थ, मैनाक, त्रिकूट, ऋषभ, कूटक, कोल्लक, देवगिरि, ऋष्यमूक, श्रीशैल, वैंकट, वारिधारा, ऋक्षगिरि, द्रोण, चित्रकूट, गोवर्धन, रैवतक, ककुभनील, गोकामुख, इन्द्रकील, कामगिरि, वैभ्राज, मन्दुर, दुर्धर (दुर्दर), वातधूम, वैद्युत, सरस, कोलाहल, वैहाल, विपुल, तुंगप्रस्थ, चित्रसानू, उज्जयन्त, पुष्पगिरि, खुर, कृतस्मर, कोकणक, शार आदि के नाम आये हैं। इनमें अनेक नाम एक ही पर्वत के भी सम्भावित हैं। मैनाक का उल्लेख हिमालय के पुत्र रूप में प्राचीन साहित्य में हुआ है। यह इन्द्र के वज्रप्रहार के भय से समुद्र में जाकर छिप गया था, इसीलिए यह समुद्रस्थ पर्वत ही रह गया। समुद्र के भीतर भी पर्वत की स्थिति है। इसका पर्याप्त वर्णन पुराणों में है और इस बात को आधुनिक भूगोलवेत्ता भी स्वीकार करते हैं। त्रिकूट पर्वत वह है, जिसकी तीन चोटियाँ विशाल हैं। श्रीशैल का विवरण भी बौद्धों द्वारा शाक्तवाङ्मय में प्राप्त होता है। महाकवि कालिदास ने मेघदूत में भी श्रीपर्वत का उल्लेख किया है। बाणभट्ट ने अपने 'हर्षचरित' में इसके सम्बन्ध में लिखा है कि इस पर्वत के चारों और अग्नि ज्वाल के जैसा प्रकाश फैला रहता था। गोवर्धन पर्वत तो व्रज में प्रसिद्ध ही है। दुर्दर की अवस्थिति पूर्व और दक्षिण दोनों दिशाओं में मिलती है। द्रोणपर्वत दक्षिण में प्रसिद्ध है। कौलाहल 'गया' के पास प्रसिद्ध ही है, जिसके ऊपर ही गया नगर की अवस्थिति है। चित्रकूट दण्डकारण्य के पास है वैहार और विपुल की अवस्थिति 'राजगीर' में मानी जाती है। रैवतक द्वारका के समीप है। इन्द्रकील और कामगिरि हिमालय की ही चोटियाँ हैं। इस तरह, पुराणोक्त पर्वतों का अति संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया।

पुराणों में नदियाँ

पुराणों में पर्वतों के पश्चात् नदियों के भौगोलिक विवरण का प्रमुख स्थान है। नदियाँ ही देश की समृद्धि को बढ़ाती हैं। नदियों की स्थिति से हमारे देश को जो लाभ हैं, उनसे तो सभी परिचित हैं। अतः हमारा साहित्य पर्वतों को पिता और नदियों को माता कहकर सम्बोधित करता है। पुराणों में वर्णित नदियों के विवरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि पुराण निर्माताओं की दृष्टि उन वर्णनों में कितनी यथार्थ और विस्तृत थी न केवल नदियों के नामों की गणना मात्र इनमें की गई है, अपितु उनका उद्गम स्थान कहाँ है, वह नदी किस प्रदेश में बहती हैं, उसकी सहायिका नदियों का संगम में स्थान कहाँ है, उसका सागर में विलयन कहाँ होता है और उसके तटों पर कौन कौन तीर्थ और नगर अवस्थित हैं इत्यादि विषयों के संकेत भी पुराणों में प्राप्त होते हैं। पुराणों के नदी विषयक ये विवरण कितने यथार्थ हैं, इसका उल्लेख नील नदी के उद्गम के अन्वेषण के सम्बन्ध में हमने पहले प्रस्तुत किया है।

सिन्धु

यह नदी वेदमन्त्रों में भी बहुत विख्यात है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में यह विवरण आता है कि नदियाँ सात–सात की तीन श्रेणियाँ बनाकर रहती हैं। 'आर्यावर्त्त' में ये नदियाँ सिन्धु नदी के पूर्व में सात, पश्चिम में सात और उत्तर में सात, इस प्रकार बहती थीं। इन सभी नदियों के बल से भी अतिशय वेग रखने वाला 'सिन्धु' नाम का 'महानद' है। त्रिःसप्त सस्त्रा नद्यः (10।64।8) आदि अन्य वाक्यों में भी इन इक्कीस नदियों का उल्लेख मिलता है।ऋग्वेद के 'नदीसूक्त' में 'सिन्धु' नदी का प्रभावपूर्ण वर्णन है। दूसरी ऋचा का अर्थ है–– ''हे सिन्धो, तुम्हारे जाने के लिए वरुण देव ने अत्यन्त विस्तृत मार्ग बनाया है; क्योंकि तुम अन्नोत्पादन को लक्ष्य करके बह रही हो। भूमि के ऊपर के मार्ग से (पर्वतीय मार्ग से) जाते हो। इतने ऊँचे मार्ग से जाते हुए तुमको सभी प्राणी प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं।'' ''वरुण जल के देवता हैं। सिन्धु का उद्भव पर्वतों से ही हुआ है। शतद्रु और सिन्धु के तट पर तथा उससे दक्षिण में बर्फीले प्रदेश के अभाव से और ताप के अधिक होने से धान्य की उत्पत्ति प्रचुर मात्रा में होती थी।'' इस सूक्त की तीसरी ऋचा में सिन्धु नदी के शब्दायमान होने का वर्णन है। ''सिन्धु की भूमि से ऊपर विद्यमान शब्द आकाश में जाता है। यह सिन्धु अपने अपार वेग को वेगवती तरंगों से ऊपर उठाता हैं। अन्तरिक्ष स्थित बादलों से जैसे वृष्टियाँ गिरती हैं, वैसे ही इससे शब्द प्रादुर्भुत होते हैं। सिन्धु इन शब्दों को बड़े जोरों से उत्पन्न करता है।'' नदियाँ जहाँ पर्वत–प्रदेश से चीने की और बहती हैं, वहाँ उनका शब्द बड़ा दुर्द्धर्ष होता है। इसका अनुभव अधिक दूर नहीं, हरिद्वार या ऋषीकेश में ही हो जाता है। नदियों के निनाद का वर्णन करना बाद में कवियों का सम्प्रदाय हो गया था। कवि मण्डल में जहाँ विभिन्न पशु पक्षी, आभूषण आदि के शब्दों के पृथक्–पृथक् नाम दिये गये हैं, वहाँ नदियों के शब्द को भी 'कलकल' संज्ञा दी गई है। ऋग्वेद का अवलोकन करने से स्पष्ट हो जाता है कि वर्णन की यह पद्धति वैदिक छन्दों में भी विद्यमान हैं। चौथी ऋचा में सिन्धु नदी का इक्कीस नदियों के पुत्र और राजा के रूप में चित्रण किया गया है। उसका अर्थ है––''हे सिन्धो ! जिस प्रकार माताएँ पुत्र को दूध पिलाती हैं, उसी प्रकार ये नदियाँ दूध पिलाने के लिए तुम्हारे पास आती हैं। जिस प्रकार दूध पिलाती हुई गोएं शब्द करती हैं, उसी प्रकार ये नदियाँ भी तुमको जल से पूर्ण करती हुई शब्द करती हैं। साथ ही, युद्ध में प्रवृत्त होने वाले राजा के समान सेना की तरह

तुम इन नदियों का निवेश करते हो क्योंकि, तुम ही इन नदियों के अग्रगामी और सबसे अधिक प्रभावशाली हो।''इस सूक्त की पाँचवीं ऋचा है–

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वती शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुदृधे वितस्तयार्जीकीये ऋणोह्या सुषोमया।।

इस मंत्र में गंगा, यमुना, सरस्वती, शुतुद्रि, मरुदृधा, आर्जीकीया और सुषोमा–– इन सात नदियों का उल्लेख है। इस मन्त्र की परुष्णी एरावती है तथा असिवनी चन्द्रभागा और वितस्ता झेलम है। इन तीनों को मिलाकर मालव देश में दक्षिणाभिमुख बहने वाली 'मरुदृधा' बनती है। ये नदियाँ जिस प्रदेश में बहती हैं वह 'सप्तसिन्धु' कहलाता है। सप्तसिन्धु का सिन्धु शब्द सिन्धु नदी का वाचक नहीं, अपितु नदी सामान्य का वाचक है। जिस प्रकार इस ऋचा की सात नदियाँ सिन्धु के इस पार 'सप्तसिन्धु–प्रदेश' बनाती हैं, उसी प्रकार सिन्धु के उत्तर पार में स्थित सात नदियों से उस पार का 'सप्तसिन्धु–प्रदेश' बनाता है। उन सात नदियों का नामोल्लेख इस सूक्त की छठी ऋचा में इस प्रकार का है–

त्रिष्टामया प्रथमं यातवे सजूः
सुसर्त्त्वा रसया श्वेत्या त्या।

त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रमु
मेहन्त्वा सरथं याभीरियसे।। (10।75।6)

इस मन्त्र में 1. त्रिष्टामा 2. सुसर्त्तु 3. रसा, 4. श्वेती, 5. कुभा, 6. कोमती और 7. कमु इन सात नदियों का नामोल्लेख है। ये नदियाँ उसी पूर्वोक्त सिन्धु नदी के पश्चिम में और पूर्व दक्षिण में बहती हुई आज दूसरे नामों से व्यवहार में आती हैं। 'चित्रल' देश के नीचे बहने वाली 'पंचकोर प्रदेश' में स्थित तीन अवयवों वाली (तीन धाराओं में बहने वाली) नदी ही मन्त्र में 'त्रिष्टामा' हो सकती है। 'सुसर्त्तु' 'स्वास्तु' का ही नाम प्रतीत होता है, जिसे आजकल 'स्वात' कहा जाता है। 'रसा का उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं। यह दूसरी 'रसा' है, जो सिन्धु नदी से सम्बद्ध है। 'श्वेती' वर्त्तमान 'डेरा इस्माइल खाँ' –प्रदेश के तल में बहने वाली 'अर्जुनी' हो सकती है। कुभा, 'काबुल' नदी का नाम है। कमु 'वर्णुप्रदेश' में बहनेवाली 'कुरम' है। गोमती को आजकल 'गोमल' कहा जाता है। ये सातों नदियाँ साक्षात् या परम्परा से सिन्धु नदी से सम्बन्ध अवश्य हैं। इनकी वर्त्तमान स्थिति का जो हमने संकेत किया है, उसे उसी रूप में 'श्रीसत्यव्रतसामश्रमी' ने अपने ऐतरेयालोचन में माना है।

इस नदीसूक्त की सप्तम और अष्टम ऋचाओं में भी सात नदियों का उल्लेख है। ये सात नदियाँ हैं– 1. ऋजीती, 2. एनी, 3. ऊर्णावती, 4. हिरण्मयी, वाजिनीवती और सीलमावती बिलकुल उत्तर दिशा में बहने वाली नदियाँ होती हैं। 'चित्रा' भी चित्रल–प्रदेश से आकर 'कुभा' (काबुल नदी) में मिल जाती है। 'ऋजीती' उसी के समीप बहने वाली प्रतीत होती है। इन ऋचाओं में सिन्धु का बड़ा आकर्षक वर्णन है। नवम ऋचा में भी उसी का चित्रण है। पूर्व और उत्तर सप्तनद प्रदेश को विभाजित करने वाला, हिमालय के मध्य से उद्भूत होनेवाला, पश्चिमवाही, प्राचीन आर्यावर्त्त को दो भागों में विभक्त करने वाला अतिप्रबल सीमादण्ड के समान यह सिन्धु नाम का महानद आज भी विद्यमान है। अश्मन्वती रीयते संरमध्वम् (10।153।8)। इस मन्त्र में

'अश्मन्वती' नदी का उल्लेख है। यह 'घर्घरा' से पश्चिम, शतद्रु से बहुत पूर्व 'विनशन प्रदेश' में है।

ऋग्वेद (1।104।1,2,3) में वर्णित 'शिफा' नाम की नदी तो निषधदेश में सम्भव है। आठवें मण्डल (96।13।14, 15)में 'अंशुमती' नदी का उल्लेख है। 'सीता' नाम की पर्वतीय नदी का भी कहीं कहीं उल्लेख है। इस वर्णन से सिन्धु को आर्यावर्त्त के मध्य भाग में और मेरुदण्ड मानने पर प्राचीन भारत का अत्यन्त विस्तार भी ज्ञात होता है। आज यह अन्वेषण का महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है।

10.4 सारांश

इस इकाई में पुराणों में सामाजिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व के विषय में विशेष रूप से वर्णन किया गया है। पुराणों में भारतीय समाज की व्यवस्था का बहुत सुन्दर रूप से चित्रण किया गया है। सुन्दर समाज बनाने की अनेक प्रकार से वर्णित किया गया हैं। सामाजिक जीवन के लिये वर्णाश्रम के गुण कर्म, विविध संस्कार, पारिवारिक सम्बन्ध, राजधर्म, स्त्रीधर्म, गुरु शिष्य के बीच सम्बन्ध इत्यादि के नियम हैं।

पुराण पूरे समाज के लिए पुराण आचार संहिता प्रदान करते हैं। किसी देवता या देवी की उपासना का विधान बताकर उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति पर पुराणों में बल दिया गया है। पुराणों की सर्वोपरि महत्ता आस्तिकवाद के समर्थन के कारण है। उनमें अनेक देवताओं का वर्णन है। सभी देवताओं की समानता की घोषणा करने पर भी एक देवता की महत्ता दिखाना सभी पुराणों का लक्ष्य रहा है। विशेष रूप से ब्रह्म, विष्णु, शिव, गणेश तथा सूर्य की उपासना–पद्धतियों का प्रमाणिक बोध पुराणों से होता है। इन्हीं के आधार पर परवर्ती कर्मकाण्ड ग्रन्थों का विकास हुआ है। हिन्दु संस्कृति की सर्वाधिक स्पष्ट रूपरेखा पुराणों में अङ्कित है। सनातन धर्म पुराणों को वेदों से बढ़कर महत्त्व देता है। नारदपुराण में इन्हें वेदों से अधिक प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि वेद अपने प्रचार और व्याख्या के लिए पुराणों पर आश्रित हैं।

10.5 शब्दावली

शब्द	**अर्थ**
अष्टादश	अट्ठारह
पुराणेषु	पुराणों में
व्यासस्य	व्यास का
वचनद्वयम्	दो वचन
परोपकारः	परोपकार
पुण्याय	पुण्य के लिये
पापाय	पाप के लिये
परपीडनम्	दूसरें की पीड़ा के लिये
गायन्ति	गाते हैं

देवाः	देवता लोग
गीतकानि	गीतों को
धन्यास्तु	धन्य हो
ते	वे लोग
भारतभूमिभागे	भारत के भू भाग में
स्वर्गाः	स्वर्ग
अपवर्गाः	मोक्ष
भूयः	होवें
पुरुषाः	पुरुष

10.6 अभ्यासार्थ प्रश्न – उत्तर

1) प्रश्न– विष्णु के विविध अवतारों का वर्णन किसमें है
   उत्तर–पुराण में
2) प्रश्न– शिव और उनके परिवार की विभिन्न कथाएँ किसमें वर्णित हैं
   उत्तर–पुराण में
3) प्रश्न– पुराण पूरे समाज के लिए प्रदान करते हैं
   उत्तर– आचार संहिता
4) प्रश्न–पुराणों के ज्ञान के माध्यम से किसका उत्थान हुआ।
   उत्तर– सामाजिक का
5) प्रश्न– सामाजिक जीवन के लिये किसका ज्ञान आवश्यक है
   उत्तर– पुराणों का

10.7 वहुविकल्पीय प्रश्न–उत्तर

1) प्रश्न– आस्तिकवाद के समर्थन में कारण है
   1 व्याकरण 2 दर्शन
   3 ज्योतिष 4 पुराण (4)
2) प्रश्न– देवताओं का वर्णन है।
   1 व्याकरण 2 दर्शन
   3 ज्योतिष 4 पुराण (4)
3) प्रश्न–हिन्दु संस्कृति की सर्वाधिक स्पष्ट रूपरेखा किसमें अङ्कित है
   1 आगम 2 व्याकरण
   3 भूमण्डल 4 पुराण (4)

4) प्रश्न–विष्णुपुराण में किसको प्रधान कहा गया है।

1 शिव 2 हनुमान

3 विष्णु 4 गणेश (3)

5) प्रश्न–शैवपुराण में परमात्मा को कहा गया है

1 शिव 2 हनुमान

3 विष्णु 4 गणेश (1)

10.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1) पुस्तक का नाम–संस्कृत साहित्य का इतिहास

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा विश्वभारती प्रकाशन वाराणसी

लेखक का नाम– उमाशंकर शर्मा ऋषि

सम्पादक का नाम–उमाशंकर शर्मा ऋषि

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा विश्वभारती प्रकाशन वाराणसी

3) पुस्तक का नाम– श्रीमद् महापुराण

प्रकाशक का नाम– गीताप्रेस गोरखपुर

4) पुस्तक का नाम– वैदिक साहित्य

लेखक का नाम– कपिलदेव द्विवेदी

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

10.9 उपयोगी पुस्तकें

1) पुस्तक का नाम–संस्कृत साहित्य का इतिहास

लेखक का नाम– उमाशंकर शर्मा ऋषि

सम्पादक का नाम–उमाशंकर शर्मा ऋषि

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा विश्वभारती प्रकाशन वाराणसी

2) पुस्तक का नाम– वैदिक साहित्य

लेखक का नाम– कपिलदेव द्विवेदी

प्रकाशक का नाम– चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

3) पुस्तक का नाम– श्रीमद् महापुराण

प्रकाशक का नाम– गीताप्रेस, गोरखपुर।

10.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1) पुराणों के सामाजिक महत्त्व का वर्णन कीजिये।